व्यंग्य-पुरोधा

हरिशंकर परसाई

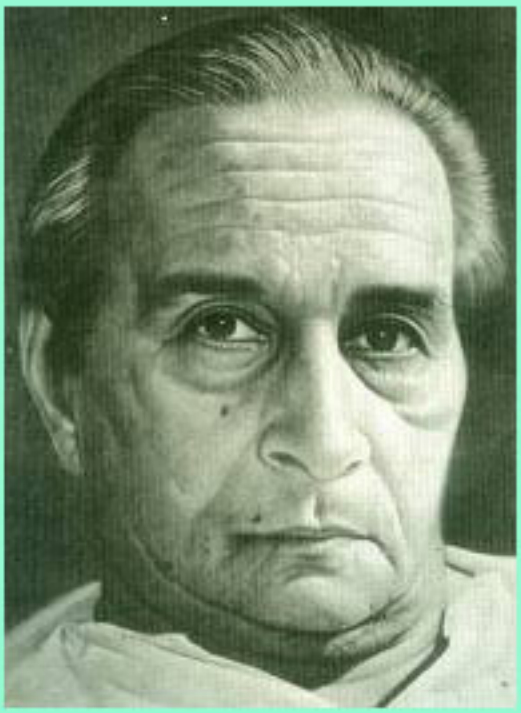

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय

व्यंग्य–पुरोधा : हरिशंकर परसाई

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय
एम .ए .,पी–एच .डी
एसोशियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
दयानन्द वैदिक (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय,
उरई (जालौन) उ0प्र0 285001

अपनी बात

व्यंग्य साहित्य की एक सशक्त विधा के रूप में स्थापित हो चुका है। ध्यातव्य है कि व्यंग्य को साहित्य की एक सशक्त विधा के रूप में स्थापित करने में व्यंग्य लेखकों को बहुत कुछ सहना पड़ा। लेकिन आधुनिक हिन्दी साहित्य आज व्यंग्य को सशक्त विधा के रूप में अपना चुका है।

जहाँ तक व्यंग्य को सशक्त साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने वाले लेखकों की भूमिका का प्रश्न है तो इसमें कतई संदेह नहीं है कि अन्य व्यंग्य लेखकों के साथ परसाई की भूमिका भी वरेण्य है। ध्यातव्य है कि व्यंग्य को साहित्य की एक सशक्त विधा बनाने में परसाई जैसे लेखक को क्या कुछ नहीं सहना पड़ा। लेकिन कबीर–सा अक्खड़ाना अंदाज और निराला–सा फक्कड़पन लिए, जीवन–विष–विषम पीकर भी परसाई ने व्यंग्य को साहित्य की धार बनाया। हमारी दृष्टि इस तरफ भी होनी चाहिए कि परसाई ने व्यंग्य को हँसी, ठिठोली से निकालकर मानस परिष्कार तक स्थापित किया। समाज, धर्म, राजनीति, कला–संस्कृति और जीवन के न जाने कितने आयामों से परसाई ने व्यंग्य को जोड़ा।

प्रस्तुत कृति के माध्यम से हमारा यह दिखाने का विनम्र प्रयास रहा है कि परसाई जी ने किस तरह समाज की विद्रूपताओं, कुप्रथाओं, विसंगतियों आदि पर निर्मम प्रहार किया और उसमें बुरा लगने जैसी कोई चीज भी नहीं है। बड़े और कुशल व्यंग्य लेखक की यही विशेषता होती है कि बड़ी–से–बड़ी विषमता पर भी अत्यन्त सधा हुआ व्यंग्य करता है। सधा हुआ भी इतना कि बिल्कुल 'एक्यूपंचर विशेषज्ञ' की तरह–जहाँ दर्द है उसी जगह सुई चुभेगी और दर्द खतम हो जायेगा। लेकिन यह अहसास नहीं होगा कि सुई **कब**, कहाँ और कितनी चुभी। यही विशेषता परसाई जी के व्यंग्यों को एक नया व्यक्तित्व प्रदान करती है। दरअसल इस कृति के माध्यम से परसाई के लेखन के इसी पक्ष को रेखांकित करना हमारा अभीष्ट रहा है।

जहाँ तक विधागत संपन्नता का प्रश्न है तो एक बात साफ तौर पर दिखायी पड़ती है कि परसाई जैसे लेखकों के लिए विषय की कमी नहीं रही है। वैसे तो व्यंग्य शैली को अपनाने वाले किसी भी रचनाकार के लिए राजनैतिक विरोधाभास ही विषय–वस्तु होती है परंतु परसाई जी का उद्देश्य समाज को संचालित करने वाली शक्तियों को लक्ष्य करना रहा है। राजनीति, समाज, धर्म, अर्थ आदि सभी पहलुओं पर परसाई जी ने जो व्यंग्य किया है, उसका उद्देश्य केवल पाठकीय आस्वादन नहीं रहा है; अपितु समाज को एक नई सोच देना भी रहा है। प्रस्तुत कृति को पाठकीय आस्वादन हेतु तैयार करने में महती भूमिका हेतु श्री नितिन गर्ग जी हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं, जिनके बिना यह शब्द यज्ञ निष्कर्ष तक नहीं पहुँच सकता था। उन मित्रों, लेखकों, शुभचितंकों एवं परिवार के सदस्यों के प्रति भी कृतज्ञता जिनका स्नेह, आशीष, दुलार मेरे लिए निरंतर संबध का काम करता है। इस कृति को प्रकाशनार्थ स्वीकृति एवं प्रकाशन हेतु धनराशि प्रदान करने के लिए मैं हृदय से केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ , जिसके कारण यह प्रयोजन पूर्ण हो सका। अंततः केवल इतना कि परसाई का व्यंग्य प्रतिरोध की नई संस्कृति को पैदा करता है और साथ ही यह भी कि पाठक समाज को नैतिकतावादी दृष्टि भी प्रदान करता है। इस विश्वास के साथ कि इस कृति के माध्यम से परसाई के साहित्य को समझने की एक नई दिशा मिलेगी–

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय
एसोशियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
दयानन्द वैदिक (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय,
उरई (जालौन) उ0प्र0 285001

अनुक्रम

	अपनी बात	5
1.	व्यंग्य : अर्थ, परिभाषाएं, अन्य संदर्भ	9
2.	हरिशंकर परसाई : व्यंग्य के प्रति दृष्टि एवं व्यंग्य की परंपरा	55
3.	हरिशंकर परसाई का कथा साहित्य एवं व्यंग्य दृष्टि	89
4.	हरिशंकर परसाई के निबंध, व्यंग्य– स्तंभ, वसुधा के लेख एवं व्यंग्य दृष्टि	119
5.	हरिशंकर परसाई के साहित्य में भाषिक विधान	163
6.	अंततः	177
	ग्रंथ सूची	*186*

व्यंग्य : अर्थ, परिभाषाएं एवं अन्य संदर्भ

– व्यंग्य : अर्थ
– परिभाषाएँ : पाश्चात्य तथा भारतीय दृष्टि
– अन्य सन्दर्भ : व्यंग्य के तत्व, व्यंग्य की रचना प्रक्रिया, व्यंग्य के मनोवैज्ञानिक प्रेरक तत्व, व्यंग्य के भेद, व्यंग्य का प्रयोजन, व्यंग्य : क्षेत्र, व्यंग्य : विधा या शैली, हास्य और व्यंग्य का अंतःसंबंध

एक

व्यंग्य : अर्थ

हिन्दी साहित्य जगत् में व्यंग्य को लेकर पर्याप्त मतभेद है। प्रख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी का मानना है कि व्यंग्य को लेकर जितना भ्रम हिन्दी में है, उतना किसी और विधा को लेकर नहीं। समीक्षकों ने भी इसकी लगातार उपेक्षा की है। अभी तक व्यंग्य की समीक्षा की भाषा ही नहीं बनी। मेरे दृष्टिकोण से इस ऊहात्मक स्थिति के दो प्रमुख कारण हैं, पहला तो व्यंग्य के स्वरूप का अस्पष्ट होना और दूसरा व्यंग्य को हास्य के साथ जोड़कर या कहें कि सहचर के रूप में देखा जाना। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुदीर्घ काल से स्वतंत्र विधा के रूप में मान्यता होने के बावजूद हिन्दी समीक्षकों का एक वर्ग व्यंग्य को हास्य का भेद–विशेष या चाकर मानता है। इस बिडम्बनाजनक स्थिति पर अपनी प्रतिक्रिया करते हुए सुधी व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल ने माना है कि व्यंग्य के साथ सबसे बड़ा व्यंग्य यह है कि उसे प्रायः हास्य के साथ जोड़कर उसका सहभागी या अनुपूरक मान लिया जाता है। वस्तुतः हास्य और व्यंग्य सहभागी होकर भी स्वतंत्र धाराएं हैं।

संस्कृत साहित्य में व्यंग्य का विवेचन हास्य के अन्तर्गत ही किया गया है। संस्कृत काव्यशास्त्र में हास्य की सैद्धान्तिक समीक्षा तो बहुत मिलती है किन्तु व्यंग्य की विवेचना कम है। संस्कृत शास्त्रीय शब्दावली में 'व्यंग्य' शब्द 'ध्वनि' के अन्तर्गत आता है। संस्कृत आचार्यों ने व्यंग्य के लिए ध्वनि की सहायता ली है। ध्वनि के आधार पर ही उत्तम, मध्यम एवं अधम काव्य की चर्चा की गई है। स्पष्टतः ध्वनि का संस्कृत में प्रयोग व्यंग्य के लिए किया जाता है। यद्यपि आधुनिक हिन्दी का स्रोत 'ध्वनि' संस्कृत के व्यंग्य से अभिन्न नहीं है, तथापि आधुनिक व्यंग्य का स्रोत 'ध्वनि' में खोजा जा सकता है। सामान्य व्यवहार में किसी श्रोतव्य नाद को ध्वनि कहते हैं, परन्तु